मधुबन ओम् शान्ति अंक 299 जून 2017

# पत्र-पुष्प

परमपिता शिव परमात्मा ज्योति बिन्दु स्वरूप

## निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(13-05-17)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा स्व-उन्नति और विश्व कल्याण की सेवा में तत्पर, पवित्रता की श्रेष्ठ स्थिति द्वारा सुख शान्ति का अनुभव करने और कराने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - सूक्ष्म में प्यारे मीठे बापदादा की अव्यक्त पालना का अनुभव करते, आप सब उड़ती कला में उड़ रहे होंगे! इस बार वार्षिक मीटिंग में स्व-उन्नति और विश्व सेवा के लिए बहुत अच्छे अच्छे प्लैन्स बनाये गये हैं, वह बुलेटिन तो आपके पास पहुंच ही जायेगी।

मेरी तो यही सूक्ष्म भावना है कि अब सारी विश्व देखे और अनुभव करे कि मेरा बाबा कैसा है! हमारी सूरत से, हमारे प्रेम भरे व्यवहार से, सच्चाई सफाई से ही सब अच्छी तरह देखेंगे कि मेरा बाबा ऐसा है। जैसे हम सबके दिल में, मुख में बाबा, बाबा शब्द समाया हुआ है, ऐसे हर एक के दिल से निकले ''मेरा बाबा, मीठा बाबा''। देखो, अव्यक्त होने के बाद भी मेरा बाबा कितने अच्छे-अच्छे अनुभव करा रहा है। मैं तो जिधर देखती हूँ, तू ही तू दिखाई देता है। मीठे बाबा ने हम सबको तीनों लोकों का मालिक बना दिया है। जब चाहे साकार में रहें, जब चाहे सूक्ष्मवतन, मूलवतन में चले जायें। निमित्त मात्र यहाँ हैं। यहाँ भी कोई बात की कमी नहीं है, लेकिन इसका कोई अभिमान नहीं है इसलिये हम भाग्यवान हैं, सदा खुश हैं। बाबा ने सच्चाई, सफाई, सादगी इन तीन बातों से ऐसा सज़ाया है जो सदा सन्तुष्ट हैं। बस यही लक्ष्य रहता है कि जहाँ भी हैं सब मेरे से राज़ी हों, खुश हों। बाबा की नॉलेज सिर्फ बोलने या सुनने के लिये नहीं है, परन्तु जीवन में लाने के लिये है।

मीठे बाबा ने ड्रामा की नॉलेज देकर इतना समझदार बना दिया है जो कोई भी व्यर्थ ख्याल चलता ही नहीं है। फ्री हो गये हैं। हमको न कोई और इच्छा है, न ममता है। मोहजाल भी नहीं है। इगो, अटैचमेंट दोनों बातों से फ्री हैं। बाबा को जो भी कार्य कराना है या ड्रामा में बना हुआ है, वह हुआ ही पड़ा है। मैं कैसे करूँगी या मुझे यह काम करना है! इस भाषा से भी मुक्त हैं।

मीठे बाबा की सकाश, सच्चाई और प्यार के सूक्ष्म वायब्रेशन चला रहे हैं। बच्चे बन गये तो माया से बच गये। अभी सिर्फ यही याद रहता है कि अब घर जाना है, सभी उड़कर जायेंगे। समय आयेगा यहाँ विनाश होगा हम बाबा के घर चले जायेंगे, भगवान के पास यह प्लान है। हमको कहता है तुम सिर्फ एवररेडी रहो, विनाश की तैयारियाँ तो हो रही हैं। हम अभी सतयुगी संस्कार बना रहे हैं। सबके प्रति भी यही शुभ चिंतन है कि सभी अपना अच्छे से अच्छा भाग्य बना लें। बाकी कोई बात का फिकर नहीं, चिंता नहीं। बाबा ने खुशी की खुराक खिलाई है। सदा खुश रहना है और सबको आने वाली दुनिया की खुशखबरी सुनानी है। बोलो, यही सेवा कर रहे हो ना! बाबा जैसे आपने चलाया है वैसे चलने में हम खुश हैं। खुशखबरी सुनाने के सिवाए और कुछ आता ही नहीं है। बाकी हमारी मीठी दादी गुल्ज़ार की तबियत ठीक है, अभी मुम्बई में पारला सेन्टर पर हैं। सभी को बहुत-बहुत याद दी है। अच्छा!

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

***बी.के.जानकी***

BK Rajesh bhai

# ये अव्यक्त इशारे

## “सदा दिलखुश मिठाई खाओ और अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करो, सुख दो सुख लो”

**1)** देवताई खुशी और ब्राह्मणों की खुशी में भी फर्क है। यह ब्राह्मण जीवन की परमात्म-खुशी, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति, देवताई जीवन में भी नहीं होगी इसलिए इस खुशी को जितना चाहे मनाओ। रोज़ समझो आज खुशी मनाने का दिन है। उड़ती कला अभी है, फिर तो जितना पाया उतना खाते रहेंगे। तो सदा यह स्मृति में रखो कि हम दिलखुश मिठाई खाने वाले हैं और दूसरों को खिलाने वाले हैं क्योंकि जितना देंगे उतना और बढ़ती जायेगी।

**2)** सदा अतीन्द्रिय सुख में रहने वालों के पास दु:ख का नाम-निशान नहीं आ सकता, असंभव। कई कहते हैं मेरे को दु:ख नहीं होता लेकिन दूसरा दु:ख देता है तो क्या करें? दूसरा देता है तो लेते क्यों हो? देने वाले तो देंगे, उनके पास है ही दु:ख लेकिन आप नहीं लो। आपका स्लोगन है - ‘‘सुख दो, सुख लो। न दु:ख दो, न दु:ख लो।’’ लेकिन गलती कर देते हो इसलिए थोड़ी दु:ख की लहर आ जाती है। कोई दु:ख दे तो उसे भी परिवर्तन कर उसको सुख दे दो, उसको भी सुखी बना दो। सुखदाता के बच्चे हो, सुख देना और सुखी रहना - यही आपका काम है।

**3)** संगमयुग की श्रेष्ठ प्राप्ति अतीन्द्रिय सुख में सदा झूलते रहो। यह सुख ही सबसे बड़ा अलौकिक अविनाशी झूला है, जैसे जो लाडले बच्चे होते हैं उनको झूले में झुलाते हैं। ऐसे आप संगमयुगी ब्राह्मणें का झूला अतीन्द्रिय सुख का झूला है। तो इसी झूले में सदा झूलते रहो। कभी भी देह अभिमान की धरनी पर पाँव नहीं रखना।

**4)** यह मरजीवा जन्म है है ही प्रत्यक्षफल खाने के लिए, किया और प्राप्ति हुई। अब मेहनत की जरूरत नहीं, फल खाने का समय है। अतीन्द्रिय सुख की जीवन में रहने का समय है। तो अतीन्द्रिय सुख के झूले में सदा झुलने वाले हो ना! जो अभी सदा इस झूले में झूलते वही श्रीकृष्ण के साथ-साथ झूलेंगे।

**5)** सदा अपने फरिश्तेपन की सीट पर सेट रहो तो अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहेंगे। इसके लिए सिर्फ एक ही सहज बात याद करनी है हम बाप के और बाप हमारा। इसी एक बात में सब समाया हुआ है। यह है बीज। बीज को पकड़ना तो सहज होता है ना। वृक्ष के विस्तार को पकड़ना मुश्किल होता है। तो यही एक बात याद रखो।

**6)** बाप ने विश्व के अन्दर से कितनी थोड़ी आत्माओं को चुना है, और उसमें से हम श्रेष्ठ आत्मायें हैं। यह संकल्प करते ही अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होगा। तो अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है वा सिर्फ सुना है? प्रैक्टिकल का अनुभव है वा सिर्फ नॉलेज है? क्योंकि ज्ञान अर्थात् समझ। तो समझ के आधार पर सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहो।

**7)** आज का मानव अनेक प्रकार की आग में जल रहा है और आप बच्चे शीतल सागर के कण्ठे पर बैठे हो, जहाँ सागर की शीतल लहरों में, अतीन्द्रिय सुख की, शान्ति की प्राप्ति में समाये हुए हो। एटामिक बाम्बस या अनेक प्रकार के बाम्बस की अग्नि ज्वाला जिससे लोग इतना घबरा रहे हैं वह तो सिर्फ सेकण्डों की, मिनटों की बात है लेकिन आजकल के अनेक प्रकार के दु:ख, चिन्तायें, समस्यायें यह भिन्न-भिन्न प्रकार की चोट जो आत्माओं को लगती है यह अग्नि जीते हुए जलाने का अनुभव कराती है। न जिंदा हैं, न मरे हुए हैं। न छोड़ सकते, न बना सकते। आप तो ऐसे जीवन से निकल श्रेष्ठ जीवन में आ गये हो, तो सदा अतीन्द्रिय सुख में समाये रहो और दूसरों को भी ऐसी अनुभूति कराने का लक्ष्य रखो। इसके लिए घर घर में, गली-गली में ज्ञान स्थान हो। सदा देने में सागर के समान सम्पन्न बनो।

**8)** पुण्य आत्मा बन सदा अपने हर बोल द्वारा औरों को खुशी में, बाप के स्नेह में अतीन्द्रिय सुख में रूहानी आनन्दमय जीवन का अनुभव कराते चलो। हर बोल से खुशी की खुराक खिलाओ। आपका हर कर्म सर्व आत्माओं के प्रति सदा सहयोग की प्राप्ति कराने वाला हो, जिससे हर आत्मा अनुभव करे कि इस पुण्य आत्मा का कर्म देख सदा आगे उड़ने का सहयोग प्राप्त हो रहा है।

**9)** मुरली की तान से अर्थात् मुरली के साज़ और राज़ से मुरलीधर बाप के साथ अनेक अनुभवों में समा जाओ। कभी मूलवतन, कभी सूक्ष्मवतन में चले जाओ, कभी अपने राज्य में चले जाओ। कभी लाइट हाउस माइट हाउस बन इस दु:खी अशान्त संसार की आत्माओं को सुख-शान्ति की किरणें दो, रोज़ तीनों लोकों की सैर करो। मुरली सुनकर अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहो। मुरलीधर की मुरली के साज़ से अविनाशी दुआ की दवा मिलते ही तन तन्दरुस्त, मनदुरुस्त हो जाता है। मस्ती में मस्त हो बेपरवाह बादशाह बन जाते हैं। बेगमपुर के बादशाह बन जाते हैं। स्वराज्य-अधिकारी बन जाते हैं।

**10)** आप बच्चे सदा ईश्वरीय पालना में पलने वाले खुशी के झूले में, अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने वाले हो। विनाशी सम्पत्ति के बजाए अविनाशी सम्पत्तिवान हो। रतन जड़ित ताज नहीं लेकिन परमात्म बाप के सिर के ताज हो। रतन जड़ित श्रृंगार नहीं लेकिन ज्ञान-गुण रूपी रत्नों के श्रृंगार से सदा श्रृंगारे हुए हो। कितना भी बड़ा विनाशी सर्व श्रेष्ठ हीरा हो, मूल्यवान हो लेकिन ज्ञान के रत्न, गुण के रत्न के आगे उनकी क्या वैल्यु है! इन रत्नों के आगे वह पत्थर के समान है क्योंकि विनाशी है। नौ लखे हार के आगे भी आप स्वयं बाप के गले का हार बन गये हो। प्रभु के गले के हार के आगे नौ लाख कहो वा नौ पदम कहो वा अनगिनत पदम के मूल्य का हार कुछ भी नहीं है।

**11)** अभी जो आप बच्चे ब्रह्मा भोजन खाते हो, इसके आगे 36 प्रकार का भोजन भी कुछ नहीं है क्योंकि डायरेक्ट बापदादा को भोग लगाकर इस भोजन को परमात्म प्रसाद बना देते हो। प्रसाद की वैल्यु आज अन्तिम जन्म में भी भक्त आत्माओं के पास कितनी है, आप साधारण भोजन नहीं खाते, प्रभु प्रसाद खा रहे हो, जो एक-एक दाना पदमों से भी श्रेष्ठ है। ऐसी सर्व श्रेष्ठ आत्मायें हो। इसी खुशी में सदा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते रहो।

**12)** संगमयुग है ही एक का पदमगुणा जमा करने का युग, तन सेवा में लगाओ और 21 जन्मों के लिए सम्पूर्ण निरोगी तन प्राप्त करो। कैसा भी कमजोर तन हो, रोगी हो लेकिन वाचा-कर्मणा नहीं तो मंसा सेवा अन्तिम घड़ी तक भी कर सकते हो। अपने अतीन्द्रिय सुख शान्ति की शक्ति चेहरे से, नयनों से दिखा सकते हो, जो सम्पर्क वाले देखकर यही कहें कि यह तो वन्डरफुल पेशेन्ट है। डाक्टर्स भी पेशेन्ट को देख हर्षित हो जाएं।

**13)** संगमयुग की विशेषता है अतीन्द्रिय सुख में झूलना, सदा खुशी में नाचना। लेकिन यह तभी होगा जब आत्मा किसी भी प्रकार के बंधन में बंधी हुई न हो। तो चेक करो कि व्यर्थ संकल्पों के, ईर्ष्या द्वेष के, अलबेलेपन के, आलस्य के ...किसी भी प्रकार के संकल्प बन्धन में तो नहीं बांधते हैं? यह सब मन्सा बंधन की निशानियां हैं, इससे महसूसता शक्ति समाप्त हो जाती है। जब यह सूक्ष्म बंधन समाप्त हो तब आन्तरिक खुशी, सदा के लिए अतीन्द्रिय सुख अनुभव कर सकेंगे।

**14)** यह ईश्वरीय ज्ञान देना ही सच्ची सेवा है। सेवा का सदा ही मेवा मिलता है। कहावत है ना - 'करो सेवा तो मिले मेवा'। तो ईश्वरीय सेवा करने से अतीन्द्रिय सुख का मेवा मिलता है, शक्तियों का मेवा मिलता है, खुशी का मेवा मिलता है। आप ब्राह्मणों के सिवाए और कोई भी इस फल के अधिकारी नहीं बन सकते।

**15)** सदा अतीन्द्रिय सुख वा खुशी सम्पन्न शान्त स्थिति का अनुभव करने के लिए कोई भी पिछला वा वर्तमान बोझ न हो। यह बोझ नीचे ले आता है इसलिए डबल लाइट बनो। बापदादा के आज्ञाकारी बनने की विशेष आशीर्वाद की लिफ्ट के प्राप्ति की अनुभूति करो।

---

*शिवबाबा याद है ?* *ओम् शान्ति* 11-01-14 *मधुबन*

## "सच्ची दिल से साहेब को राजी रखना हो तो दिल में कोई खोटा, खराब व्यर्थ या निकम्मा संकल्प नहीं लाओ"

**(दादी जानकी)**

**ब्र**ह्मा मुख से शिवबाबा ने जो सुनाया, वो अन्दर समाया हुआ है। वण्डर है बाबा का। तो दिल खोलके अन्दर देखते हैं, दिल में क्या है? जो बाबा ने सुनाया है, वही दिल में समाया हुआ है! वही फिर स्वरूप में लाना है। प्रैक्टिकल लाइफ में जितना वो यूज़ हो रहा है, उतना लगता है कल्प-कल्प के लिए यह नूँध हो रही है। कोई मुरली ऐसी नहीं है जिसमें बाबा कहे बच्चे मेरे को याद करो। तो पूर्व जन्मों के कर्मबन्धन फिर इस जन्म के बन्धन वो सब खलास करना है। किसके साथ भी हमारा कोई बन्धन नहीं है, बन्धनमुक्त। देह के सम्बन्ध से न्यारे बनने से सुख मिला है इलाही। ऐसे ही सुख नहीं मिलता है। बाबा का कंडीशन है, अगर देह के सम्बन्ध के बन्धन हैं तो दु:ख ही दु:ख है। मैं अपने देह को भी बन्धन बनायेंगी तो दु:ख है इसलिए देह में होते भी जैसे मैं देह से न्यारी हूँ। देह में हूँ ही नहीं। आत्मा इस शरीर से अगर निकल जाये तो यह शरीर कोई काम का नहीं है। यह वण्डर है कि आत्मा कैसे गर्भ में आती है! कैसे निकलती है, क्या है? पहले अज्ञान है तो लाइफ

कैसी है, अभी वही लाइफ ज्ञान में आने से बहुत अच्छी है। ज्ञान क्या है? शरीर भी मेरा नहीं है, शरीर में हूँ। सारे दिन में आत्मा कितने विचार करती है! अभी उसको समझके कन्ट्रोल में रखना, फ्री रहना इससे मन शान्त होगा। मन की शान्ति के लिए हमने कुछ दबाया नहीं है परन्तु शान्त रहना अपने को सिखाया है। मन हो शान्त, तन हो शीतल, ऐसी दुनिया बनानी है। पहले तो तुम अपने को बनाओ ना। मन के कारण तन भी घड़ी-घड़ी हलचल में आ जाता है। तो माया बिल्ली है, उसका झूठा कभी नहीं खाना चाहिए।

हर सेकेण्ड में बाबा अपनी याद दिलाता है। ऐसा खींचने वाला है जो और कोई याद आता नहीं है। धीरज धर मनुआ, सुख के दिन आयेंगे। हर एक बात में बाबा याद है। इस गीत पर बाबा ने बहुत बार मुरली चलाई होगी। जो पिया के साथ है उसके लिए बरसात है... दूर देश का रहने वाला आया देश पराये... यह रावण का पराया देश है और बाबा को खास याद करना नहीं पड़ता है, पर बाबा की याद ऐसी है और कोई बात याद आती नहीं है।

जो बाबा ने मधुबन में किया कराया है वही सब करना है, बुद्धि में और कुछ प्लान नहीं है। जो भगवान का प्लान होगा उसी अनुसार करना है, चलना है। तो इसमें मैं अपना क्या प्लान करूँ वा सोचूँ! जो भगवान का प्लान ड्रामा में बना हुआ है, उसी अनुसार बाबा चला रहा है, हम चल रहे हैं। तो याद क्या करें? परे ऐसे नहीं कोई उल्टा कर्म करता रहे। थोड़ा भी उल्टा करेंगे, गलतियां होंगी, तो पीछे सजायें नहीं मिलेंगी, अभी सजा मिलती है, बाबा के घर में पाँव टिकेगा नहीं, ब्रह्माभोजन खाने के लिए वहाँ डायनिंग हॉल में भी नहीं जा सकेंगे। बाबा की यह रचना देख करके संगमयुग पर और क्या बात सुनाऊं, जहाँ बाप है वहाँ और कोई बात नहीं है। जो और बातें करता है उसको बाबा कभी याद आयेगा नहीं। याद करने की कोशिश करेंगे तो रोना आयेगा। बाबा जितना ही प्यार का सागर है, उतना ही कायदे-कानूनों में भी वण्डरफुल है। बहुत कायदे हैं, अच्छी तरह से बुद्धि योग लगा हुआ हो, कोई भी बात बुद्धि में न आये।

फिर कभी कोई थोड़ी भूल करते हैं तो फौरन क्षमा मांगे। बाबा मुरली में बताता है, बाबा को सच बता दो, कि बाबा मेरे से यह भूल हुई, फौरन सच बताओ। लिखो, तो क्षमा करता है। यह मैंने प्रैक्टिकल देखा है। आंखों देखी बात है, भूल की, अगर वो भूल बाबा को बताई बाबा ने उसे रिपीट नहीं किया, फौरन क्षमा किया। मेरा बाबा ऐसा है क्षमा का सागर। अगर कोई अच्छा काम करता है तो फौरन दस गुणा देता है, हिम्मते बच्चे मददे बाप .. बाबा वायदा निभाता है, अनुभव कराता है। सच्ची दिल से साहेब को राज़ी रखना हो तो कभी भी दिल में कोई खोटा, खराब, व्यर्थ या निकम्मा संकल्प नहीं लाओ। अगर संकल्प में अन्दर बुद्धि चली गई तो बाबा से योग लगेगा नहीं, सजा है। समय थोड़ा है हर एक अच्छा पुरुषार्थ कर सकता है, बच्चा है, चाहे बूढ़ा है, चाहे जवान है, चाहे बीमार है। वो भी अपने को बीमार नहीं समझेगा। कारण का न सोच अब क्या करने का है? अब हमको ईश्वरीय स्नेह की सकाश मिल रही है। एक है चिंता, दूसरा है चिंतन, तीसरा है चितविना, अन्दर घड़ी घड़ी ईश्वरीय स्नेह से स्थिति अच्छी रखना अति सुखदाई है। अच्छा - ओम् शान्ति।

**दूसरा क्लास**

## "फरिश्ता बनने के पहले ब्राह्मणों की क्वालिटी धारण कर दया, रहम, क्षमा और शान्ति से काम लो, पूर्वज और पूज्यनीय के स्वमान में रहो"

आज मेरे को आया एक शब्द में बाबा को कैसे प्रत्यक्ष करें! एक शब्द तो बाबा ही है। सारे विश्व में सारे कल्प में सतयुग में भी ऐसा बाप नहीं मिलेगा। भले यह नारायण बनेगा, उसको अभी हम सब कहते हैं हमारा बाबा है, सतयुग में यह नशा नहीं होगा। यही नारायण बनेगा तो हमको थोड़ेही कहेगा मैं तेरा हूँ। अभी कहता है तुम मेरा बच्चा हो, मैं कहती हूँ तू मेरा बाप हो। किसको यह नशा है? 21वीं सदी चल रही है, 21 जन्म की राजाई मिल रही है, क्या बड़ी बात है! 84 जन्म की प्रालब्ध अभी बना रहे हैं।

जिसके कर्म थोड़े खोटे होंगे वह यहाँ रह नहीं सकेगा, खोटे कर्म वाले का यहाँ पाँव नहीं टिक सकेगा। तो खबरदार, होशियार रहना है। भगवान को क्या चाहिए? भगवान को कुछ नहीं चाहिए। मैं पूछती हूँ भगवान तुम मिला है, इतना कुछ दिया है मैं क्या दूँ आपको! मेरे पास क्या रखा है? सबकुछ

आपने इतना दिया है जो बांटने से बढ़ता है इसके सिवाए और कोई काम नहीं है। अगर मेरा एक भी व्यर्थ संकल्प चला तो सारी शक्ति गई। सारी कमाई और नुकसान संकल्प पर है। जरा भी व्यर्थ संकल्प चला तो छिपके भी रोयेगा, सामने आयेगा तो भी क्या बोले! तो कितना अच्छा बाबा है, कैसे प्रैक्टिकल करने की शक्ति भी देता है, यह भी नहीं कि बाबा समझाते तो अच्छा हो पर मैं कैसे करूँ! यह शब्द कभी कहा है! मीठे बाबा ने हमको स्वमान में रहने के लिए, अपनी सीट पर बैठने के लिए प्रैक्टिकल अनुभव कराया है। मैं कैसे कहूँ कैसे करूँ? कैसे, परन्तु, फलाना टिढ़ा... यह शब्द यह मुँह बोले, तो मुस्करायेगा कैसे? उसका मुस्कराना रीयल नहीं होगा, नेचुरल नहीं होगा।

पता थोड़ेही था कि हजारों लाखों बाबा के बच्चे ऐसे पैदा हो जायेंगे। साकार में बाबा ने यह मुरलियां चलाई हैं, सब समझाया है पर प्रैक्टिकल यह आँखें देखेंगी, वण्डर है! बाबा ने मुरलियों में जो सुनाया समझाया है, वह सब इन आँखों ने देखा है। कल्प पहले वाले हम बाबा के बच्चे हैं, यह स्मृति रहे। शुरू शुरू में बाबा पूछता था पहले कभी मिले थे? हाँ बाबा कल्प पहले मिले थे। यह इतना छोटा-सा, थोड़ा-सा ज्ञान जीवन भर खुराक का काम करता है। ज्ञान इतना है, ज्ञान सागर बाबा ने दिया है। शान्ति का सागर है, प्रेम का सागर है, पतित-पावन है, सर्वशक्तिवान है। हाँ जी बाबा कहने में बहुत सुख पाया है। जैसे भक्ति में भावना से कहते थे जिधर देखता हूँ तू ही तू, अभी वो सीन प्रैक्टिकल में जिधर देखती हूँ उधर बाबा ही बाबा है। छोटा है, बड़ा है, बूढ़ा है, जवान है, कोई भी है, कोई पोजीशन वाला है, इंजीनियर है, डॉक्टर है... सबने बड़े प्यार से बाबा को अपनाया है, बाबा बाबा कहते हैं। साहूकार कोई विरला आया होगा, सोच में समय गंवायेगा और गरीब बिचारा तुरंत कहेगा बाबा, तो बाबा कहेगा जी बच्चा बैठ जा।

कहते हैं दो रोटी खाना शिवाबाबा के गुण गाना। दो रोटी खाओ, भले खाओ, लेकिन बाबा को याद करके खाओ। एक बारी मैं नाश्ता करना शुरू ही कर रही थी, इतने में बाबा आया और कहा नाश्ता कर रही हो? कथा किया ही नहीं नाश्ता कर रही हो! वो दिन आज का दिन, उसी दिन से बाम्बे के हैंगिंग गार्डन में बैठ करके बूढ़ों को ज्ञान देती थी, जो वॉक करने आते थे, उनसे पहले पहले माटूँगा में सेन्टर खुला, फिर वहाँ से और सेन्टर खुले। सिर्फ बाबा की यह सावधानी कथा किया है? क्योंकि सत्यनारायण की कथा है ना! सच्चाई से नारायण बनेंगे। भक्तिमार्ग में पूर्णमासी के दिन सारा दिन व्रत रखते थे, दिन में सत्यनारायण की कथा ब्राह्मण से कराते थे। रात को सम्पूर्ण चन्द्रमा देख फिर खाना खाते थे। अभी यह चितविना लगे ना कि मुझे सम्पूर्ण बनना है, रोज़ सत्यनारायण की कथा सुन रहे हैं, किसलिए? पहले विकर्माजीत, फिर कर्मातीत फिर सम्पूर्ण, फिर अव्यक्त फरिश्ता बनना है।

अभी सच्ची दिल से हाथ उठाओ किसको यह एम है? क्योंकि लक्ष्य है ना! तो बाबा लक्षण धारण करने में साथ देता है। तो बाबा का यह लक्ष्य रूपी लक्स सोप है, उसके बिगर स्नान कैसे करेंगे, यानि लक्ष्य सामने है तो उसी अनुसार पुरुषार्थ चलता रहता है। तो सभी ने लक्ष्य सामने रखा है ना, कभी लक्ष्य को नहीं भूलना।

आपस में ऐसी रूहरूहान करो जो सबको और कुछ बोलने आवे ही नहीं, अभी और क्या बोलना है! बाबा कहता है कोई कुछ बात सुनावे, कोई पत्र भी आवे... भगवान उनको बुद्धि देगा। नहीं तो बुद्धि फालतू बातों में बहुत जाती है। फिर सिद्ध करते हैं, यह बहुत बड़ी कड़ी बीमारी है। मैंने यह नहीं किया, फलाने ने किया... अरे क्या बात करते हो? भगवान के घर बैठे हो। ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अन्धेर विनाश, यह प्रैक्टिकल देखा है। अज्ञानता, कितने भी बल्ब जलाओ फिर भी अन्धेरा ही नज़र आता है, कोई काम नहीं कर सकते हैं। जिस घड़ी ज्ञान सूर्य प्रगट हुआ, भगवान ने तीसरा नेत्र दे करके त्रिकालदर्शी बना दिया। फिर कहा तीनों लोकों के मालिक हो, यहाँ निमित्त मात्र हो, बाकी रहते वहाँ हो। बनना सूक्ष्मवतन वासी है, अभी तो मूलवतन की चाबी बाबा ने बच्चों को दे दी है, पीछे जाने का रास्ता खुलेगा तब तक सूक्ष्मवतन में रहने के लिए सूक्ष्मवतनवासी बनने के लिए यहाँ बैठे भी फरिश्ता होकर रहना है।

ब्राह्मणों की महिमा बहुत है, पूर्वज और पूज्यनीय हैं। हमको पूजा करानी नहीं है, पर पूर्वजों की जो क्वालिटीज़ हैं ना दया, रहम, क्षमा, शान्ति से काम लेना। जरा भी शो नहीं, नाम मान का नाम-निशान नहीं। सफेद कपड़े जेब खाली, हम हैं सारे मुल्क के वाली... वण्डरफुल बातें हैं। तो मुरली पढ़ते, अपने आपको देखते, दुनिया को देख फिर अपने ईश्वरीय परिवार को देख अच्छे हैं, मतलब कहता है सब जल्दी अच्छे बन जाओ तो विनाश आ जायेगा। तो जरा भी कभी भूल से खुद में या बाप में थोड़ा निश्चय की कमी हुई, तो वो आत्मा अडोल अचल स्थिति में रह करके सदा दिल से मुख से बाबा बाबा बाबा नहीं कह सकेगा, जबकि बाबा कैसा है जब तक दुनिया ने ऐसा नहीं देखा है तब तक विनाश कैसे हो। साइंस और साइलेंस का आपस में कनेक्शन है ना। जब से बाबा आया है तब से साइंस की कमाल देखो। साइलेंस क्या है? वण्डर ऑफ साइलेंस। पर साइंस की दुनिया में हम सब पार्ट बजा रहे हैं, अधीन नहीं हैं। अच्छा।

# “अन्तिम परीक्षाओं में पास होने के लिए सदा फरिश्ते रूप में रहने का अभ्यास करो, व्यर्थ संकल्पों में समय नहीं गंवाओ”

**(गुल्जार दादी जी)**

समर्पण का अर्थ क्या होता है? समर्पित माना सब कुछ अर्पित। हमने सब-कुछ बाबा को अर्पण कर दिया। बाबा ने मुख्य बात कही कि आजकल सबसे ज्यादा तो व्यर्थ संकल्प चलते हैं, वही खत्म होने चाहिए। तो यह किसने चेकिंग की कि व्यर्थ संकल्प चलते हैं या खत्म हो गये हैं? जो समझते हैं हमारे व्यर्थ संकल्प नहीं चलते हैं वो हाथ उठाना। व्यर्थ संकल्प माना कोई बुरे नहीं हैं, लेकिन जितना सोचना चाहिए उससे ज्यादा कोई भी बात की डीप में जाते हैं, तो वो भी व्यर्थ हुआ ना। बाकी बुरे संकल्प, वो अलग चीज़ हैं लेकिन जो हमारे सोचने की बात नहीं है और वही सोच चल पड़ता है तो वो भी तो व्यर्थ हुआ ना। उस व्यर्थ संकल्प से टाइम भी व्यर्थ जाता है।

तो बाबा ने जो काम दिया है वो होना चाहिए क्योंकि बाबा ने कहा है अन्त में ऐसी बातें आयेंगी जो आपको फुलस्टॉप लगाना पड़ेगा यानि ज्यादा टाइम सोचने में न चला जाए। एक सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाना पड़ेगा क्योंकि अन्त के समय मनुष्यों की बुद्धि बहुत खराब होगी, और यह जो भटकती हुई आत्मायें जिन्न भूत हैं, वो भी बहुत ज्यादा अपना वार करेंगे, सबकी अन्तिम घड़ी होगी, तो अन्तिम घड़ी में जैसे जोश आता है हम करके ही देखें। तो वो तो होगा ही इसलिए बाबा ने एक दृश्य दिखाया था कि एक कुमारी योग में बैठी है और खराब संकल्प वालों की दृष्टि वृत्ति उसके ऊपर पड़ती है, वह उसी वृत्ति से उसके आगे आगे आ रहे हैं। तो जैसे वो आगे आगे बढ़े वैसे उनको कुमारी के बजाए लाइट ही दिखाई दी। कुमारी दिखाई नहीं दी एकदम लाइट दिखाई दी, तो वो डर गये और उनका संकल्प स्टॉप हो गया। तो बाबा कहते हैं अन्त में ऐसी अनेक बातें आयेंगी, उसमें आपको बिल्कुल ही लाइट रूप होना पड़ेगा। कोई किसी भी संकल्प से आवे लेकिन वो संकल्प उन्हों का पूरा नहीं हो, उसके लिये आप फरिश्ते रूप में उन्हों को दिखाई दें। लेकिन यह तब होगा जब हमारा मन के ऊपर एक सेकण्ड में कन्ट्रोल हो। जहाँ हम मन को ठहराना चाहें वहाँ ही उसी संकल्प में मन ठहर जाए। तो यह प्रैक्टिस अभी करनी पड़ेगी। उस समय पेपर के टाइम थोड़ी बहुत हलचल होती है। लेकिन हमारी इतनी प्रैक्टिस हो जो हम कहें स्टॉप तो स्टॉप हो जाये। जैसे बाप के तीन रूप हैं बाप, शिक्षक, सतगुरू, वैसे हमारे भी तीन रूप हैं ब्राह्मण, फरिश्ता और देवता। कभी कोई रूप धारण करो तो कभी कोई रूप धारण करो। अभी से हमारी यह प्रैक्टिस चाहिए। समझो कोई भी बात देख करके व्यर्थ संकल्प चलते हैं या फ्री होते हैं तो कन्ट्रोलिंग पॉवर कम हो जाती है इसलिए व्यर्थ संकल्प आते हैं। तो वो व्यर्थ संकल्प हम एक सेकण्ड में स्टॉप कर सकते हैं? यह प्रैक्टिस अभी ही करनी पड़ेगी!

तो रात्रि को सोने के पहले हर एक सारे दिन की रिजल्ट बाबा को सुनाये। पहले जमाने में सारा परिवार साथ में बैठता था और लेन-देन करते थे। आजकल वो जमाना ही बदल गया लेकिन बाबा तो बड़े ते बड़ा है ना, तो सारी रिजल्ट बाबा को बतानी चाहिए। हम इस बंधन में स्वयं को बांधेंगे तो अपनी चेकिंग कर सकेंगे। बाबा ने यह भी कहा है कि मानो आपसे छोटी-मोटी गलती हो गयी, व्यर्थ संकल्प चलना भी तो गलत है ना! लेकिन उसकी माफी बाबा से अभी ले लो। अगर अभी माफी ले लेंगे, तो उसमें यह फायदा होता है कि जो कोई भी चीज़ दे दी तो दी हुई चीज़ अगर वापस आ जाती है तो सोचा जाता है कि क्या दी हुई चीज़ मैं अपने पास रख सकती हूँ! तो बाबा को दिल से दे दी, तो बाबा उसकी सज़ा क्या देगा! बाबा तो और ही पॉवर भरेगा। इसलिए बाबा को सुनाकर माफी ले लो। तो धर्मराजपुरी में जाना नहीं पड़ेगा। तो रात को सोने के पहले यह जरुर करना चाहिए जिससे नींद बहुत अच्छी आती है, आप करके देखना। जैसे दो घण्टे की नींद में अगर संकल्प स्वप्न आदि कुछ नहीं हुआ, दिमाग खाली है तो ऐसे लगता है जैसे हम चार घण्टे सोके

उठे हैं। दो घण्टे का सुख जैसे चार घण्टे का लगता है। तो यह जरुर करना चाहिए, तो रहेगा कि मेरे को बाबा को सुनाना है। बाबा क्या है वो तो हमको पता है। तो बाबा को सुनाना है तो आपकी चेकिंग ऑटोमेटिकली चलेगी। रोज़ का रोज़ बाबा को दे दो और माफी ले लो तो हम कर्मातीत होते जायेंगे। सभी को कर्मातीत तो होना है ना। इस बारी बाबा ने खास मधुबन वालों को भी कहा है कि अगर रिजल्ट ठीक निकली तो मैं आऊंगा, मिलूँगा। तो इतनी बाबा ने जब ऑफर की है, तो हम लोगों को अटेन्शन भी इतना देना चाहिए।

तो बाबा ने जो कहा कि व्यर्थ संकल्प नहीं चलें, यह चेकिंग किसने की? रिजल्ट ठीक रही? चार्ट भी सिर्फ कॉपियों में भरने के लिये नहीं रखना, चार्ट रखना माना चेन्ज। हम भी पहले-पहले रोज़ चार्ट लिखते थे वो ठीक है। लेकिन यह चेक करें कि हमारे में फर्क पड़ रहा है? चार्ट क्यों लिखते हैं? स्वयं को चेंज करने के लिए लिखते हैं ना क्योंकि किसी समय कुछ भी हो सकता है। बाबा अचानक का पाठ तो हमको दे ही रहा है। तो हमारा पुरुषार्थ ऐसा है? मैंने देखा है पुरुषार्थ सभी का चलता है लेकिन चलते-चलते पुरुषार्थ में दृढ़ता कम हो जाती है। जिस समय संकल्प किया, उस समय तो दृढ़ता होती है फिर जब कर्म में आते हैं, बातचीत करते हैं, जो भी ड्युटीज़ होती हैं उसमें आते, संगठन में आते दृढ़ता कम हो जाती है। और दृढ़ता ही सफलता की चाबी है, अगर दृढ़ता कम हो गई तो सफलता जो चाहते हैं वो नहीं होती है। होती है लेकिन जैसा चाहते हैं वो नहीं होगी। तो बाबा ने अटेन्शन खिंचाया है, उसी अनुसार हम क्या समझते हैं! अटेन्शन है?

आज से मेरा संकल्प है कि हर एक को रोज़ अपना दृढ़ता का चार्ट देखना चाहिए। जो भी मैंने पुरुषार्थ में संकल्प किया, उसमें दृढ़ता चलती रही या थोड़ा अलबेलापन आ जाता है, ठीक है कर तो रहा हूँ, हो जायेगा, रहेगा थोड़ेही, टाइम पर पूरा हो जायेगा... ऐसे दृढ़ता कम करने के संकल्प जो आते हैं वो हमको ढीला कर देते हैं। और बाबा को रोज़ अपना सारे दिन का चार्ट देवें जैसे बड़े को देना ही है, ऐसे नहीं बाबा को दिया ना, ऐसे नहीं दृढ़ता से दिया! अपने फायदे को सोच करके दिया या ऐसे ही सुना है तो देना ही है। तो अब कोई प्लैन बनाओ, बना सकते हैं? कैसे बनायेंगे? बना तो सकते हो, शाबाश है लेकिन कैसे बनायेंगे? अपना अपना बनायेंगे या कोई ग्रुप बैठ करके बनायेगा? क्या सोचा है? तो पक्का है। कल से सभी रात्रि को बाबा को अपनी रिजल्ट देके और जो भी कुछ हो गया उसकी माफी भी अभी ले लो। बाबा के हिसाब से तो व्यर्थ संकल्प भी गलती है, तो व्यर्थ संकल्प हमारे चले? समझो कोई चीज़ देखी, यह हो रहा है, उसके संकल्प चल पड़ते हैं यह क्यों हुआ, क्या है, कैसे है, यह कहाँ तक चलेगा, यह नहीं होना चाहिए, मतलब ऐसे फालतू संकल्प चलते हैं.. क्योंकि मेरी जिम्मेवारी है ही नहीं इसकी। तो चेक करना है लेकिन पता कैसे पड़े कि चेक आपने किया या नहीं? हम तो कनेक्शन में आते ही नहीं हैं, उसकी क्या विधि हो? अपने ही मन को पक्का करना होगा क्योंकि रोज़ तो कोई आपस में मिलता ही नहीं है तो अपना ही मास्टर बनके अपने को चेक करना पड़ेगा, और कोई विधि नहीं है।

इसमें अपने आप ही हेड बनना पड़ेगा। तो एकदम दृढ़ निश्चय करो कोई काम भी इसेन्सीयल हो, दो अक्षर लिखना है, बस। डायरी रखनी है फिर कभी भी बाबा डायरी मंगाके देख सकता है। डायरी में ज्यादा नहीं लिखना है व्यर्थ संकल्प चले? कितना टाइम चले? कभी कभी एक ही टाइम पर व्यर्थ संकल्प 10 मिनट भी चल सकते हैं, 2 मिनट भी चल सकते हैं लेकिन टोटल सारे दिन में कितना व्यर्थ संकल्प चलें? या मैंने जो लक्ष्य रखा सवेरे कि आज मैं इस बात पर खास अटेन्शन दूँगा, तो वो भी चेक करो कि सारे दिन का जो हमने संकल्प रखा, स्वरूप का वो मेरा ठीक रहा या नही? बस। तो यह कर सकते हैं? हो सकता है? क्योंकि हमारा बाबा से प्यार है, लेकिन प्यार में यह व्यर्थ का जो विघ्न पड़ता है उसको मिटाना है। बाबा का आप सबसे प्यार है तो बाबा कोई भी बात अगर सुनते हैं तो बाबा को अच्छा नहीं लगता है। तो हम जिस लक्ष्य से आये हैं, वो लक्ष्य हमारा पूरा हो रहा है या नहीं? अच्छा! ओम शान्ति।

# दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

बाबा ने हम बच्चों को ड्युटी दी है - तुम हो विश्व कल्याणकारी। मैं कोई एक आत्मा की सेवा के निमित्त नहीं। विश्व में सब आ जाते। जब विश्व कल्याण की सेवा पर स्वयं को देखते हो तो कल्याण की सेवा वाले ऐसे नहीं कहेंगे अभी तक मेरे संस्कार परिवर्तन नहीं होते। अगर मेरे ही संस्कार परिवर्तन नहीं तो मैं दूसरों का कैसे करूंगी। हम सब गॉडली सर्विस पर हैं। हमारी जिन्दगी ओनली बाबा की सेवा के निमित्त है। हमें तो अब वापिस स्वीट साइलेंस होम में जाना है। हम यहाँ खाने-पीने के लिए नहीं जिन्दा हैं, यह अन्तिम समय है ही विश्व कल्याण की सेवा के लिए इसलिए अपना समय, संकल्प और सम्पति तीनों खुद के लिए नहीं हैं परन्तु खुदा के लिए हैं। खुद के लिए खायेंगे तो आसक्ति जायेगी। हम खुदा की सेवा के लिए इस घोड़े को घास देते हैं। जब बुद्धि में रहता - संसार हमारा बाबा है, जो भी है सब बाबा के लिए है तो बुद्धि की लाइन क्लीयर हो जाती है।

ज्ञान की मंजिल कहती है - अकेला हूँ, अकेला जाना है। अकेला समझो तो कभी भी देह तरफ आकर्षण नहीं जा सकती। हम बाबा की गोदी में चले गये, न मैं किसी की गोदी में हूँ, न कोई मेरी गोदी में आ सकता। यह ईश्वरीय लॉ कहता है। हमें तो देह के धर्मों से भी परे जाना है। बुद्धि में एक बाबा है तो सब विकारी वृत्तियां समाप्त हो जाती। ज्ञान की ढाल को साथ रखो।

आपस में कभी भी खिट-पिट नहीं होनी चाहिए। जब अपने को मालिक समझते तो आँख दिखाते। बाबा ने कहा तुम्हें प्रवृत्ति में प्रेम और शान्ति से रहना है। एक मत हो रहना है। हरेक की बुद्धि अपनी है, हिसाब-किताब अपना है। परन्तु लक्ष्य रखने से लक्षण आ ही जाते हैं। श्रीमत को जज बनाओ। श्रीमत कहती है - एकमत रहना ही है। इसमें कभी-कभी दूसरे की बात को रखना पड़ता... ऐसे नहीं समझो बाबा ने तो कहा है तुम अकेले हो, तुम्हें श्रीमत को ही मानना है। साथी की बात को ठुकरा दो, ऐसा भी एडवान्टेज नहीं लेना है। हरेक को अपना-अपना एक्यूरेट खेल खेलना है। केयरफुल रहो तो चियरफुल बन जायेंगे। अगर केयरफुल नहीं रहते तो खिट-खिट होती है इसलिए होश भी रखना होता और फिर उमंग, जोश भी रखना होता। बाबा कहते दोनों का बैलेन्स बनाकर चलो।

कभी भी थोड़ी-थोड़ी बातों में अपना मूड ऑफ मत करो। ऑफ माना ऑफ। अगर थोड़ी घड़ी के लिए किसी ने कुछ रांग भी बोला, आपने उसे समझा दिया यह रांग है, परन्तु वह नहीं मानता तो उसके कारण तुम अपनी स्थिति खराब क्यों करते! तुम डिस्टर्ब क्यों होते! क्या उस टाइम में आपकी योगयुक्त स्थिति कही जायेगी? फिर दूसरे के पीछे तुम अपना चार्ट क्यों खराब करते? राइट रांग की राय देना आपका कर्तव्य है। बाकी हरेक को चलना तो अपने पांव से है। अपना चार्ट खराब नहीं करो। स्व स्थिति से ही सेवा कर सकेंगे। स्व का चार्ट ठीक रखो। स्व आत्मा को शीतल बनाओ, सर्व शक्तियों को साथ रखो। जब टाइम समाने का हो तो उसे समा दो, जब राइट रांग से उसका सामना करना हो तो सामना करो। समय पर सहन करने की बात हो तो सहन कर लो। ऐसे नहीं मैं क्या करूं - मेरे में तो सहन करने की शक्ति नहीं है। जब नहीं कहा तो नहीं माना योग नहीं। अगर योगयुक्त रहना है तो हर शक्ति को हमेशा अपने साथ रखो। सारा दिन पेपर तो हरेक के सामने आते। जैसे सौभाग्य हमारा बनता वैसे माया उसे तोड़ने के 100 प्रयत्न करती है। परन्तु अपनी स्व स्थिति में, स्वमान में रहो तो उसके लिए हैरान नहीं होना पड़ेगा।

जिसके पास जो भी कड़ा संस्कार हो वह लिखकर बाबा के पास छोड़ दो। जो भी गलतियां होती हैं उन्हें खत्म करो। कोई भी कड़े संस्कार हों, गुस्से का, रूसने का, ईर्ष्या का, रीस करने का तो आज त्याग दो। अलबेलेपन की नींद को तलाक दो। दुनिया में तो ईर्ष्या की बहुत कड़ी बुरी आदत मनुष्यों में रहती है। यह आदत ब्राहमणों में नहीं होनी चाहिए। परन्तु देखा जाता है ईर्ष्या के वश कई ब्राहमण दूसरे को आगे बढ़ता देख नहीं सकते। कहेंगे हर बात में फलाने को ही आगे किया जाता! क्या यही सर्विस कर सकता? फिर पैदा हो जाती है जैलसी। लेकिन बाबा कहते हरेक को सेवा करने का हक है, जो ओटे सो अर्जुन। सबको सर्विस में अपनी अंगुली बढ़ानी है। कोई तन से, कोई धन से, कोई मन से... सबको मिलकर करना है। ईर्ष्या नहीं रखनी है। जैसे सर्विस बढ़ती है वैसे ब्राह्मणों में मैं तू पैदा होती। इसीलिए बाबा ने मंजिल तो सेकण्ड की सरल कर दी है परन्तु जितनी सरल है उतनी कठिन भी है। तो अब पुराना चौपड़ा खलास करो। जो हिसाब-किताब हो उसे साफ स्वच्छ बनाकर बाबा की सेवा में लग जाओ। अच्छा।